योगदा सत्संग सोसायटी संस्थापक पर सिक्का जारी होगा : मेघवाल

जयपुर। हम सब क्या खोजते हैं, क्या यह धन, संबंध, स्वास्थ्य या ये सभी? परमहंस योगानंद जी ने अपने व्याख्यान (धर्म विज्ञान) जो उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्र धर्म सम्मेलन में जो 1920 में बोस्टन में हुआ था। उसमें स्पष्ट तौर से समझाया कि हम सब क्या खोलते हैं। यह सिक्के के दो पहलुओं की तरह है। एक तो हर तरह के दुःखों से मुक्ति-शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक हमेशा के लिए जिसकी कोई पुनरावृत्ति नहीं और दूसरा परम आनंद की प्राप्ति। ये विचार योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ इंडिया के ट्रेजरार सुदबोधनंद ने संस्था के 100 वर्ष पूरे होने पर कहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि

आज के तनावपूर्ण वातावरण में सुख-शांति से जीने का मार्ग योगदा द्वारा सुझाए गए क्रिया योग से संभव है। आपने योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ इंडिया की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने पर इसके संस्थापक स्वमी परमहंस योगानंद की स्मृति सिक्का जारी करने के प्रयास की घोषणा की। पूर्व में उन पर डाक टिकट जारी हो चुका है। मेघवाल को संस्थान की ओर से सम्मानित किया गया।